अध्याय

20

आत्मा का ताप

© JCERT not to be republished

सैयद हैदर रज़ा

1. जीवन परिचय

I. जन्म– सैयद हैदर रज़ा का 22 फरवरी जन्म 1922 ई. में मध्य प्रदेश के बाबरिया गाँव में हुआ।

II. शिक्षा– इन्होंने स्कूली शिक्षा नागपुर बोर्ड से पास की। इन्होंने चित्रकला की शिक्षा नागपुर स्कूल ऑफ आर्ट व सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई से प्राप्त की। इन्होंने भारत में अपनी कला की अनेक प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं।

III. कैरियर– उन्होंने गोंदिया में ड्राइंग टीचर की नौकरी की।इसके बाद 1950 ई. में वे फ्रांसीसी सरकार की छात्रवृत्ति पर फ्रांस गए और वहाँ चित्रकला का अध्ययन किया। इन्होंने आधुनिक भारतीय कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

- आधुनिक भारतीय चित्रकला को जिन कलाकारों ने नया और आधुनिक मुहावरा दिया, उनमें सैयद हैदर रज़ा का नाम महत्वपूर्ण है।

- रज़ा सिर्फ़ इसी वजह से कला की दुनिया में सम्मान्य नहीं हैं बल्कि, जिन कलाकारों ने आधुनिक भारतीय कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया उनमें हुसैन और सूज़ा के साथ रज़ा का नाम अगली पंक्ति में आता है।इनमें हुसैन सबसे ज़्यादा घुमक्कड़ रहे, लेकिन उनका केंद्र भारत ही रहा।

IV. सम्मान– इन्हें 'ग्रेड ऑव ऑफ़िसर ऑव द आर्डर ऑव आटर्स ऐंड लेटर्स' अवार्ड से सम्मानित किया गया। 2007 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

V. मृत्यु– 23 जुलाई सन् 2016 में.

2.साहित्यिक-परिचय

I. रज़ा की कला में भारतीय और पश्चिमी कला दृष्टियों का मेल है। लंबे समय तक पश्चिम में रहने और वहाँ की कला की बारीकियों से प्रभावित होने के बावजूद रज़ा ठेठ रूप से भारतीय कलाकार हैं।

II. **बिंदु उनकी कला–** रचना के केंद्र में है। उनकी कई कलाकृतियाँ बिंदु का रूपाकार हैं। यह बिंदु केवल रूपाकार नहीं है, बल्कि पारंपरिक भारतीय चिंतन का केंद्र बिंदु भी है।

III. यहाँ यह भी गौरतलब है कि बिंदु की तरफ़ उनका झुकाव उनके स्कूली शिक्षक नंदलाल झरिया ने कराया था।रज़ा की कला और व्यक्तित्व में उदात्तता है। उनकी कला में रंगों की व्यापकता और अध्यात्म की गहराई है।

IV. उनकी कला को भारत और दूसरे देशों में काफ़ी सराहा गया है। रुडॉल्फ़ वॉन लेडेन, पियरे गोदिबेयर, गीति सेन, जाक लासें, मिशेल एंबेयर आदि ने रज़ा पर मोनोग्राफ़ लिखे हैं।

V. **रचनाएँ** –सैयद हैदर रज़ा कलाकार तो हैं ही, साथ ही अच्छे लेखक भी हैं। इनके द्वारा लिखी हुई पुस्तक का नाम है-'आत्मा का ताप' (आत्मकथा) ।

© JCERT not to be republished

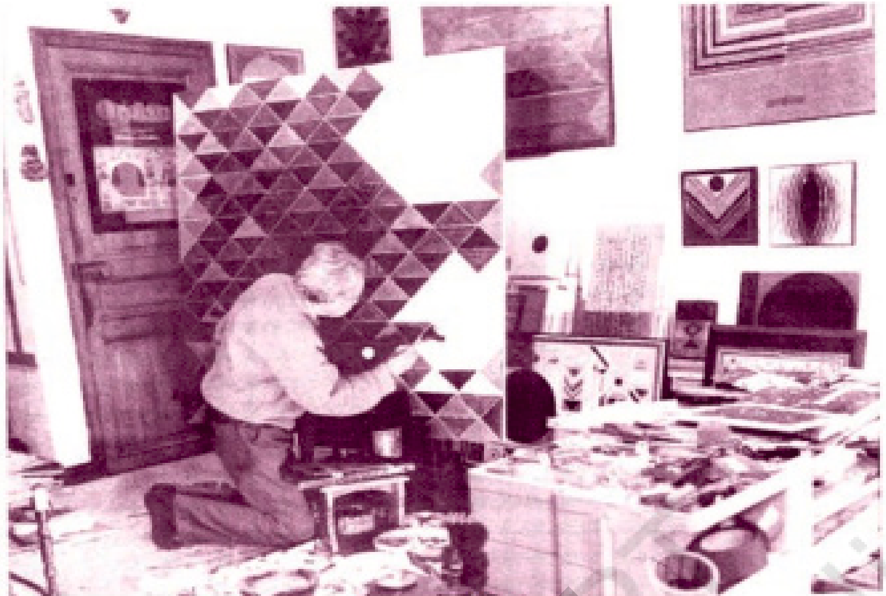

रज़ा अपने स्टूडियो में, पेरिस

पाठ का सार

I. यहाँ दिया गया पाठ सैयद हैदर रज़ा की आत्मकथात्मक पुस्तक 'आत्मा का ताप'का एक अध्याय है। इसका अंग्रेज़ी से हिंदी अनुवाद मधु बी. जोशी ने किया है। यहाँ रज़ा ने चित्रकला के क्षेत्र में अपने आरंभिक संघर्षों और सफलताओं के बारे में बताया है।

II. एक कलाकार का जीवन-संघर्ष और कला - संघर्ष, उसकी सर्जनात्मक बेचैनी, अपनी रचना में सर्वस्व झोंक देने का उसका जुनून-ये सारी बातें इसमें बहुत रोचक व सहज शैली में उभरकर आयी हैं।

III. लेखक को स्कूल की परीक्षा के दस में नौ विषयों में विशेष योग्यता मिली तथा वह कक्षा में प्रथम आया। पिता जी के रिटायर होने के कारण उसे गोंदिया में ड्राइंग टीचर की नौकरी की। मुंबई में एक्सप्रेस ब्लॉक स्टूडियो में डिजाइनर की नौकरी की तथा साल भर की मेहनत के बाद स्टूडियो के मालिक जलील व मैनेजर हुसैन ने उसे मुख्य डिज़ाइनर बना दिया।

IV. जलील साहब ने कई दिनों तक लेखक को देर रात तक स्केच बनाते हुए देखा था। जिससे प्रभावित होकर उन्होंने अपने फ्लैट का एक कमरा लेखक को दे दिया।

V. लेखक पूरी तरह काम में डूब गया और 1948 ई. में उसे बॉम्बे सोसाइटी का स्वर्ण पदक मिला। इस पुरस्कार को पाने वाला यह सबसे कम आयु का कलाकार था। दो वर्ष बाद इन्हें फ्रांस सरकार की छात्रवृत्ति मिली। नवंबर, 1943 में आर्ट्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की प्रदर्शनी में लेखक के दो चित्र प्रदर्शित हुए। अगले दिन टाइम्स

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

ऑफ इंडिया में कला समीक्षक रुडॉल्फ वॉन लेडेन ने लेखक के चित्रों की तारीफ की। दोनों चित्र 40-40 रुपये में बिक गए। ये पैसे उसकी महीने भर की कमाई से अधिक थे।

VI. लेखक को प्रोत्साहन देने वालों में वेनिस अकादमी के प्रोफेसर वाल्टर लैंगहैमर भी थे। उन्होंने उसे काम करने के लिए अपना स्टूडियो दे दिया। वे 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में आर्ट डायरेक्टर थे। लेखक दिन में बनाए हुए चित्र उन्हें दिखाता। उसका काम निखरता गया। लैंगहैमर उसके चित्र खरीदने लगे। 1947 ई. में वह जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट का नियमित छात्र बन गया।

VII. श्रीनगर यात्रा में उसकी भेंट प्रख्यात फ्रेंच फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए-ब्रेसाँ से हुई। उसने लेखक की चित्रों की प्रशंसा की, परंतु उनमें रचना का अभाव बताया। उसने सेजाँ का काम देखने की सलाह दी। लेखक पर इसका गहरा प्रभाव हुआ। मुंबई आकर उसने अलयांस फ्रांसे में फ्रेंच भाषा सीखी। 1950 ई. में फ्रेंच दूतावास में सांस्कृतिक सचिव से हुए वार्तालाप के बाद उसे दो वर्ष की छात्रवृत्ति मिली।

लेखक 2 अक्टूबर, 1950 को फ्रांस के मार्सेई पहुँचा। बंबई में उसमें काम करने की इच्छा थी। आत्मा का चढ़ा ताप लोगों को दिखाई देता था। लोग सहायता करते थे। वह युवा कलाकारों से कहता है कि चित्रकला व्यवसाय नहीं, आत्मा की पुकार है। इसे अपना सर्वस्व देकर ही कुछ ठोस परिणाम मिल पाते हैं। केवल जहरा जफरी को काम करने की ऐसी लगन मिली। वह दमोह शहर के आसपास के ग्रामीणों के साथ काम करती हैं। लेखक यह संदेश देना चाहता है कि कुछ घटने के इंतजार में हाथ पर हाथ धरे न बैठे रहो-खुद कुछ करो। अच्छे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं करते, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं।गीता भी कहती है कि जीवन में जो कुछ है, तनाव के कारण है। जीवन का पहला चरण बचपन एक जागृति है, लेकिन लेखक के लिए बंबई का दौर ही जागृति चरण था। वह कहता है पैसा कमाना महत्वपूर्ण होता है। अंततः वह महत्वपूर्ण नहीं होता। उत्तरदायित्व पूरे करने के लिए पैसा जरूरी है।

शब्दार्थ-

गोंदिया, अमरावती, अकोला- तीनों महाराष्ट्र के शहर हैं

संदिग्ध- संदेहयुक्त।

संयोजन- जोड़ना, मिलाना।

कबायली- कबीलों का,कबीलों द्वारा

फ़्लैट- बहुमंजिला भवन में रहने के लिए कई सारे आवास बनाये जाते हैं जिन्हें फ्लैट कहा जाता है

गलीज़- गंदा, मैला

ज़बरदस्त- जो बहुत ही दृढ़ या मजबूत हो।

not to be republished © JCERT

प्रदर्शनी– वह स्थान जहाँ तरह-तरह की वस्तुएँ दिखाने के लिए रखी हों

कला-समीक्षक– कलाओं पर आलोचना लिखने वाला कला समीक्षक कहलाता है।

जलरंग– पानी मिलाकर तैयार किया गया रंग।

विश्लेषण– अलग करना,छानबीन करना।

सामर्थ्य– समर्थ होने का भाव, योग्यता, शक्तिशहराती-शहरी

सलाम– प्रणाम

ग़ज़ब– अँधेर, आफ़त ढाने वाला, विद्वेष फैलाने वाला

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. मैंने अमरावती के गवर्नमेंट नॉर्मल स्कूल से त्यागपत्र दे दिया। जब तक मैं बंबई पहुँचा तब तक जे.जे. स्कूल में दाखिला बंद हो चुका था। दाखिला हो भी जाता तो उपस्थिति का प्रतिशत पूरा न हो पाता। छात्रवृत्ति वापस ले ली गई। सरकार ने मुझे अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी देने की पेशकश की। मैंने तय किया कि मैं लौटूँगा नहीं, बंबई में ही अध्ययन करूँगा।

प्रश्न

1. **लेखक ने नौकरी से त्यागपत्र क्यों दिया?**
2. **लेखक की छात्रवृत्ति वापिस लेने का कारण बताइए।**
3. **सरकार ने उन्हें क्या पेशकश की?**

उत्तर–

1. लेखक को मुंबई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में अध्ययन के लिए मध्य प्रांत की सरकार की तरफ से छात्रवृत्ति मिली। इस कारण उन्होंने अमरावती के गवर्नमेंट नॉर्मल स्कूल से त्यागपत्र दे दिया।
2. लेखक को जे.जे. स्कूल में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिली, परंतु त्यागपत्र देने व अन्य कारणों से वह मुंबई देर से पहुँचा। तब तक इस स्कूल में दाखिले बंद हो गए थे। यदि दाखिला हो भी जाता तो उपस्थिति का प्रतिशत पूरा नहीं हो पाता। अत: दाखिला न लेने के कारण छात्रवृत्ति वापस ले ली गई।
3. लेखक ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और उसे जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला भी नहीं मिला। अब वह बेरोजगार था। अत: सरकार ने उसे अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी देने की पेशकश की।

2. इस सम्मान को पाने वाला मैं सबसे कम आयु का कलाकार था। दो बरस

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

बाद मुझे फ्रांस सरकार की छात्रवृत्ति मिल गई। मैंने खुद को याद दिलाया' भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं'। मेरे पहले दो चित्र नवंबर 1943 में आर्ट्स सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की प्रदर्शनी में प्रदर्शित हुए। उद्घाटन में मुझे आमंत्रित नहीं किया गया, क्योंकि मैं जाना-माना नाम नहीं था। अगले दिन मैंने 'द टाइम्स ऑफ़ इंडिया' में प्रदर्शनी की समीक्षा पढ़ी।

प्रश्न

1. **लेखक को कौन-सा सम्मान मिला तथा क्यों?**
2. **'भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं'-यह कथन किसने, किस संदर्भ में कहा?**
3. **लेखक ने प्रदर्शनी की समीक्षा में क्या पढ़ा?**

उत्तर-

1. लेखक को 1948 ई. में बॉम्बे आर्ट्स सोसाइटी का स्वर्ण पदक मिला। वह पुरस्कार पाने वाला सबसे कम आयु का कलाकार था।
2. यह कथन लेखक ने उस समय कहा जब बॉम्बे आर्ट्स सोसाइटी द्वारा स्वर्ण पदक मिला।
3. लेखक ने प्रदर्शनी की समीक्षा 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में पढ़ी जिसमें कला समीक्षक रूडाल्फ़ वॉन लेडेन ने लिखा था कि एस.एच. रज़ा के नाम के छात्र के एक-दो जलरंग लुभावने हैं। उनमें संयोजन और रंगों के दक्ष प्रयोग की ज़बरदस्त समझदारी दिखती है।

3. **भले ही 1947 और 1948 में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी हों, मेरे लिए वे कठिन बरस थे। पहले तो कल्याण वाले घर में मेरे पास रहते मेरी माँ का देहांत हो गया। पिता जी मेरे पास ही थे। वे मंडला लौट गए। मई 1948 में वे भी नहीं रहे। विभाजन की त्रासदी के बावजूद भारत स्वतंत्र था। उत्साह था, उदासी भी थी। जीवन पर अचानक जिम्मेदारियों का बोझ आ पड़ा। हम युवा थे। मैं पच्चीस बरस का था, लेखकों, कवियों, चित्रकारों की संगत थी। हमें लगता था कि हम पहाड़ हिला सकते हैं। और सभी अपने-अपने क्षेत्रों में, अपने माध्यम में सामर्थ्य भर-बढ़िया काम करने में जुट गए। देश का विभाजन, महात्मा गांधी की हत्या क्रूर घटनाएँ थीं। व्यक्तिगत स्तर पर, मेरे माता-पिता की मृत्यु भी ऐसी ही क्रूर घटना थी। हमें इन क्रूर अनुभवों को आत्मसात करना था। हम उससे उबर काम में जुट गए।**

प्रश्न

1. **1947 व 1948 में कौन-कौन-सी महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं?**
2. **लेखक के साथ व्यक्तिगत रूप से कौन-सी दुखद घटनाएँ घटीं?**
3. **घटनाओं को आत्मसात करने से लेखक का क्या अभिप्राय है?**

© JCERT not to be republished

उत्तर-

1. 1947 में वर्षों की गुलामी के बाद भारत अंग्रेज़ों से आज़ाद हुआ। भारत का विभाजन कर दिया गया था। 1948 ई. में महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई थी। ये दोनों घटनाएँ राष्ट्र पर गहरा प्रभाव डालने वाली थीं।

2. लेखक की माता की मृत्यु 1947 में हुई। उसके पिता साथ रहते थे, परंतु माता की मृत्यु के बाद वे मंडला चले गए। 1948 ई. में उनकी भी मृत्यु हो गई। अत: सारी जिम्मेदारियाँ लेखक के कंधों पर अचानक आ पड़ीं।

3. 1947 में देश को आज़ादी मिली, परंतु विभाजन की पीड़ा के साथ। 1948 में महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई। लेखक के ऊपर भी जिम्मेदारियाँ आ गई, क्योंकि माता-पिता दोनों का अचानक निधन हो गया। घर व देश दोनों जगह अव्यवस्था थी। अत: इन सभी घटनाओं को आत्मसात यानी चुपचाप सहन करके ही आगे बढ़ा जा सकता था।

4. **1948 में मैं श्रीनगर गया, वहाँ चित्र बनाए। ख्वाज़ा अहमद अब्बास भी वहीं थे। कश्मीर पर कबायली आक्रमण हुआ, तब तक मैंने तय कर लिया था कि भारत में ही रहूँगा। मैं श्रीनगर से आगे बारामूला तक गया। घुसपैठियों ने बारामूला को ध्वस्त कर दिया था। मेरे पास कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला का पत्र था, जिसमें कहा गया था कि यह एक भारतीय कलाकार हैं, इन्हें जहाँ चाहे वहाँ जाने दिया जाए और इनकी हर संभव सहायता की जाए। एक बार मैं बस से बारामूला से लौट रहा था या वहाँ जा रहा था तो स्थानीय कश्मीरियों के बीच मुझ पैंटधारी शहराती को देखकर एक पुलिसवाले ने मुझे बस से उतार लिया। मैं उसके साथ चल दिया। उसने पूछा, 'कहाँ से आए हो? नाम क्या है?" मैंने बता दिया कि मैं रज़ा हूँ, बंबई से आया हूँ। शेख साहब की चिट्ठी उसे दिखाई। उसने सलाम ठोंका और परेशानी के लिए माफ़ी माँगता हुआ चला गया।**

प्रश्न

1. **1948 ई में कश्मीर में कौन-सी घटना घटी?**
2. **लेखक ने क्या तय किया?**
3. **रज़ा को मिले पत्र में क्या लिखा था?**

उत्तर-

1. 1948 ई. में कश्मीर पर कबायली हमला हुआ। उन्होंने बारामूला को तहस-नहस कर दिया था। उस समय रज़ा श्रीनगर में था।

2. कबायली हमले को देखकर रज़ा ने निर्णय किया कि वह पाकिस्तान के बजाय भारत में रहेगा। वह देश विभाजन के पक्ष में नहीं था।

3. रज़ा को तत्कालीन कश्मीर के प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला का पत्र

© JCERT not to be republished

मिला था। इसमें लिखा था कि यह एक भारतीय कलाकार हैं, इन्हें जहाँ चाहे वहाँ जाने दिया जाए और इनकी हर संभव सहायता की जाए।

5. **श्रीनगर की इसी यात्रा में मेरी भेंट प्रख्यात फ्रेंच फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए-ब्रेसाँ से हुई। मेरे चित्र देखने के बाद उन्होंने जो टिप्पणी की वह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने कहा, 'तुम प्रतिभाशाली हो, लेकिन प्रतिभाशाली युवा चित्रकारों को लेकर मैं संदेहशील हूँ। तुम्हारे चित्रों में रंग है, भावना है, लेकिन रचना नहीं है। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि चित्र इमारत की ही तरह बनाया जाता है- आधार, नींव, दीवारें, बीम, छत और तब जाकर वह टिकता है। मैं कहूँगा कि तुम सेज़ाँ का काम ध्यान से देखो।' इन टिप्पणियों का मुझ पर गहरा प्रभाव रहा। बंबई लौटकर मैंने फ्रेंच सीखने के लिए अलयांस फ्रांसे में दाखिला ले लिया। फ्रेंच पेंटिंग में मेरी खासी रुचि थी, लेकिन मैं समझना चाहता था कि चित्र में रचना या बनावट वास्तव में क्या होगी।**

प्रश्न

1. श्रीनगर में लेखक की मुलाकात किससे हुई? वह लेखक के लिए महत्वपूर्ण कैसे थी?
2. लेखक की चित्रकला में क्या कमी थी?
3. लेखक को श्रीनगर की यात्रा से क्या प्रेरणा मिली ?

उत्तर-

1. श्रीनगर में लेखक की मुलाकात फ्रेंच फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए ब्रेसाँ से हुई। उसने लेखक के चित्रों को देखा तथा उन पर टिप्पणी की। उसने कहा कि तुम प्रतिभाशाली हो, परंतु उसमें निखार नहीं आया है। तुम्हारे चित्रों में रंग, भावना है, परंतु रचना नहीं है। तुम्हें सेज़ाँ का काम देखना चाहिए।
2. लेखक की चित्रकला में रचना पक्ष की कमी थी। जिस प्रकार इमारत की रचना में आधार, नींव, दीवार, बीम, छत आदि की भूमिका होती है, उसी प्रकार लेखक के चित्रों में आधार की कमी थी।
3. लेखक को श्रीनगर की यात्रा से यह प्रेरणा मिली कि उसने बंबई लौटते ही अलयांस फ्रांसे में दाखिला लिया ताकि फ्रेंच भाषा सीख सके। उसे फ्रेंच पेंटिंग में खासी रुचि थी, परंतु वह बनावट या रचना को समझना चाहता था।

6. **मैंने धृष्टता से उन्हें बताया कि 'बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीखा' मेरे मन में शायद युवा मित्रों को यह संदेश देने की कामना है कि कुछ घटने के इंतजार में हाथ पर हाथ धरे न बैठे रहो-खुद कुछ करो। ज़रा देखिए, अच्छे-खासे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं कर रहे, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं। और यहाँ हम बेचैनी से भरे, काम किए जाते हैं। मैं बुखार से छटपटाता-सा, अपनी आत्मा, अपने चित्त को संतप्त**

© JCERT not to be republished

किए रहता हूँ। मैं कुछ ऐसी बात कर रहा हूँ जिसमें खामी लगती है। यह बहुत गजब की बात नहीं है, लेकिन मुझमें काम करने का संकल्प है। भगवद् गीता कहती है, 'जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है।' बचपन, जीवन का पहला चरण, एक जागृति है। लेकिन मेरे जीवन का बंबईवाला दौर भी जागृति का चरण ही था।

प्रश्न

1. **लेखक युवा मित्रों को क्या संदेश देता है?**
2. **लेखक अपने चित्त को क्यों संतप्त किए रहता है?**
3. **भगवद्गीता का संदेश क्या है?**

उत्तर–

1. लेखक युवा मित्रों के संदेश देता है कि उन्हें काम करना चाहिए। उन्हें कुछ घटने का इंतजार नहीं करना चाहिए। हाथ पर हाथ धरे रहना मूर्खता है।
2. लेखक सच्चा कलाकार है। उसकी आत्मा निरंतर नया करने के लिए व्याकुल रहती है। उसका कलाकार मन बुखार से पीड़ित व्यक्ति की तरह छटपटाता है।
3. भगवद्गीता का संदेश है–जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है। अर्थात् संघर्ष के बिना उन्नति नहीं हो सकती। अगर जीवन में उन्नति और सफलता का स्वाद चखना है तो उसे संघर्ष के पथ पर चलना ही होगा।

पाठ के साथ

1. रज़ा ने अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी की पेशकश क्यों नहीं स्वीकार की?

उत्तर– लेखक को मध्य प्रांत की सरकार की तरफ से बंबई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में दाखिला लेने के लिए छात्रवृत्ति मिली। जब वे अमरावती के गवर्नमेंट नार्मल स्कूल से त्यागपत्र देकर बंबई पहुँचा तो दाखिले बंद हो चुके थे। सरकार ने छात्रवृत्ति वापस ले ली तथा उन्हें अकोला में ड्राइंग अध्यापक की नौकरी देने की पेशकश की। लेखक ने यह पेशकश स्वीकार नहीं की, क्योंकि उन्होंने बंबई शहर में रहकर अध्ययन करने का निश्चय कर लिया था। उन्हें यहाँ का वातावरण, गैलरियाँ व मित्र पसंद आ गए। चित्रकारी की गहराई को जानने-समझने के लिए बंबई (अब मुंबई) अच्छी जगह थी। चित्रकारी सीखने की इच्छा के कारण उन्होंने यह पेशकश ठुकरा दी।

2. बंबई में रहकर कला के अध्ययन के लिए रज़ा ने क्या-क्या संघर्ष किए?

उत्तर– बंबई में रहकर कला के अध्ययन के लिए रज़ा ने कड़ा संघर्ष किया। सबसे पहले उन्हें एक्सप्रेस ब्लाक स्टूडियो में डिजाइनर की

© JCERT not to be republished

नौकरी मिली। वे सुबह दस बजे से सायं छह बजे तक वहाँ काम करते थे फिर मोहन आर्ट क्लब जाकर पढ़ते और अंत में जैकब सर्कल में एक परिचित ड्राइवर के ठिकाने पर रात गुजारने के लिए जाते थे। कुछ दिन बाद उन्हें स्टूडियो के आर्ट डिपार्टमेंट में कमरा मिल गया। उन्हें फर्श पर सोना पड़ता था। वे रात के ग्यारह-बारह बजे तक चित्र व रेखाचित्र बनाते थे। उनकी मेहनत देखकर उन्हें मुख्य डिजाइनर बना दिया गया। कठिन परिश्रम के कारण उन्हें मुंबई आर्ट्स सोसाइटी का स्वर्ण पदक मिला।

1943 ई. में उनके दो चित्र आर्ट्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की प्रदर्शनी में रखे गए, किंतु उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया। उनके चित्रों की प्रशंसा हुई। उनके चित्र 40-40 रुपये में बिक गए। वेनिस अकादमी के प्रोफेसर वाल्टर लैंगहैमर ने उन्हें अपना स्टूडियो दिया। लेखक दिनभर मेहनत करके चित्र बनाता तथा लैंगहैमर उन्हें देखते तथा खरीद भी लेते। इस प्रकार लेखक नौकरी छोड़कर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट का नियमित छात्र बना।

3. भले ही 1947 और 1948 में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी हों, मेरे लिए वे कठिन बरस थे- रज़ा ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- रज़ा ने इन्हें कठिन बरस इसलिए कहा, क्योंकि इस दौरान उनकी माँ का देहांत हो गया। पिता जी को मंडला लौटना पड़ा तथा अगले साल उनका देहांत हो गया। इस प्रकार उनके कंधों पर सारी जिम्मेदारियाँ आ पड़ीं।

1947 में भारत आज़ाद हुआ, परंतु विभाजन की त्रासदी भी थी, गांधी की हत्या भी 1948 में हुई। इन सभी घटनाओं ने लेखक को हिला दिया। अत: वह इन्हें कठिन वर्ष कहता है।

4. रजा के पसंदीदा फ्रेंच कलाकार कौन थे?

उत्तर- रज़ा के पसंदीदा फ्रेंच कलाकारों में सेज़ाँ, वॉन गॉज, गोगाँ पिकासो, मातीस, शागाल और ब्रॉक थे। इनमें वह पिकासो से सर्वाधिक प्रभावित थे।

5. तुम्हारे चित्रों में रंग है, भावना है, लेकिन रचना नहीं है। तम्हें मालूम होना चाहिए कि चित्र इमारत की ही तरह बनाया जाता है- आधार, नींव, दीवारें, बीम, छत और तब जाकर वह टिकता है-यह बात

(क) किसने, किस संदर्भ में कही?

(ख) रज़ा पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर-

(क) यह बात प्रख्यात फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए-ब्रेसाँ ने श्रीनगर की यात्रा के दौरान सैयद हैदर रज़ा के चित्रों को देखकर कही थी। उनका मानना था कि चित्र में भवन-निर्माण के समान सभी तत्व मौजूद होने चाहिए। चित्रकारी में रचना की जरूरत होती है। उसने लेखक को सेज़ाँ के चित्र देखने की सलाह दी।

(ख) फ्रेंच फोटोग्राफर की सलाह का रज़ा पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुंबई लौटकर उन्होंने फ्रेंच सीखने के लिए अलयांस फ्रांस में दाखिला लिया। उनकी रुचि फ्रेंच पेंटिंग में पहले ही थी। अब वे उसकी बारीकियों को समझने का प्रयास करने लगे। इस कारण उन्हें फ्रांस जाने का अवसर भी मिला।

© JCERT not to be republished

पाठ के आस-पास

1. रज़ा को जलील साहब जैसे लोगों का सहारा न मिला होता तो क्या तब भी वे एक जाने-माने चित्रकार होते? तर्क सहित लिखिए।

उत्तर- रज़ा को जलील साहब जैसे लोगों का सहारा न मिला होता तो भी वे एक जाने-माने चित्रकार होते। इसका कारण है-उनके अंदर चित्रकार बनने की अदम्य इच्छा। लेखक बचपन से ही प्रतिभाशाली था। उसे आजीविका का साधन मिल गया था, परंतु उसने सरकारी नौकरी छोड़कर चित्रकला सीखने के लिए कड़ी मेहनत की। मेहनत करने वालों का साथ कोई-न-कोई दे देता है। जलील साहब ने भी उनकी प्रतिभा, लगन व मेहनत को देखकर सहायता की। लेखक के उत्साह, संघर्ष करने की क्षमता, काम करने की इच्छा ही उसे महान चित्रकार बनाती है।

2. चित्रकला व्यवसाय नहीं, अंतरात्मा की पुकार हैं-इस कथन के आलोक में कला के वर्तमान और भविष्य पर विचार कीजिए।

उत्तर- लेखक का यह कथन अक्षरश: सही है। जो व्यक्ति इस कला को सीखना चाहते हैं, उन्हें व्यावसायिकता छोड़नी होती है। व्यवसाय में व्यक्ति अपनी इच्छा से अभिव्यक्ति नहीं कर सकता। वह धन के लालच में कला के तमाम नियम तोड़ देता है तथा ग्राहक की इच्छानुसार कार्य करता है। उसकी रचनाओं में भी गहराई नहीं होती। ऐसे लोगों का भविष्य कुछ नहीं होता। जो कलाकार मन व कर्म से इस कला में काम करते हैं, वे अमर हो जाते हैं। उनकी कृतियाँ कालजयी होती हैं; उन्हें पैसे की कमी भी नहीं रहती, क्योंकि उच्च स्तर की रचनाएँ बहुत महँगी मिलती हैं। वर्तमान दौर में भी चित्रकला का भविष्य उज्ज्वल है।

3. हमें लगता था कि हम पहाड़ हिला सकते हैं-आप किन क्षणों में ऐसा सोचते हैं?

उत्तर- जब व्यक्ति में कुछ करने की क्षमता व उत्साह होता है तब वह कुछ भी कर गुजरने को तैयार हो जाता है। मेरे अंदर इतना आत्मविश्वास तब आता है जब कोई समस्या आती है। मैं उस पर गंभीरता से विचार करता हूँ तथा उसका सर्वमान्य हल निकालने की कोशिश करता हूँ। ऐसे समय में मैं अपने मित्रों व सहयोगियों का साथ लेता हूँ। समस्या के शीघ्र हल होने पर हमें लगता है कि हम कोई भी कार्य कर सकते हैं।

4. राजा रवि वर्मा, मकबूल फिदा हुसैन, अमृता शेरगिल के प्रसिदध चित्रों का एक अलबम बनाइए। सहायता के लिए इंटरनेट या किसी आर्टगैलरी से संपर्क करें।

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. 'आत्मा का ताप' पाठ के रचयिता है-

(क) सैयद हैदर रज़ा

(ख) सैयद अहमद रज़ा

(ग) सैयद जलाल रज़ा

(घ) सैयद मुहम्मद रज़ा

उत्तर- **(क) सैयद हैदर रज़ा**

2. लेखक कहाँ ड्राइंग का अध्यापक बन गया था?

(क) रायपुर

(ख) गोंदिया

(ग) चंद्रपुर

(घ) अकोला

उत्तर- **(ख) गोंदिया**

3. सरकार ने कहाँ ड्राइंग अध्यापक देने की पेशकश की थी?

(क) चंद्रपुर

(ख) नागपुर

(ग) अकोला

(घ) गोंदिया

उत्तर- **(ग) अकोला**

4. लेखक ने कहाँ रहने का निश्चय किया था?

(क) कोलकाता

(ख) दिल्ली

(ग) चेन्नई

(घ) मुंबई

उत्तर- **(घ) मुंबई**

5. लेखक को रहने का स्थान किस ड्राइवर ने दिया था?

(क) ट्रक

(ख) टैक्सी

(ग) बस

(घ) थ्री व्हीलर

उत्तर- **(ख) टैक्सी**

6. टैक्सी ड्राइवर का क्या नाम था?

(क) गाल्फ़

(ख) राल्फ़

(ग) गोल्फ़

(घ) रोल्फ़

उत्तर- **(ख) राल्फ़**

© JCERT not to be republished

7. सन् 1948 में 'बांबे आर्ट्स सोसाइटी' का कौन-सा पदक मिला था?

(क) रजत

(ख) स्वर्ण

(ग) कांस्य

(घ) कोई भी नहीं

उत्तर- (ख) स्वर्ण

8. किस सरकार ने लेखक को छात्रवृत्ति दी थी?

(क) अमेरिका

(ख) इंग्लैंड

(ग) रूस

(घ) फ्रांस

उत्तर- (घ) फ्रांस

9. रूडाल्फ़ वॉन लेडेन की कला समीक्षा कहाँ छपी थी?

(क) हिंदुस्तान टाइम्स

(ख) द हिंदू

(ग) टाइम्ज़ ऑफ़ इंडिया

(घ) नैशनल हैरल्ड

उत्तर- (ग) टाइम्ज़ ऑफ़ इंडिया

10. रज़ा के दोनों चित्र कितने रुपए के बिके थे?

(क) 30-30

(ख) 40-40

(ग) 50-50

(घ) 60-60

उत्तर- (ख) 40-40

11. लेखक कब जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स का नियमित छात्र बना?

(क) 1946

(ख) 1947

(ग) 1948

(घ) 1949.

उत्तर- (ख) 1947

12. लेखक फ्रांस के लिए किस महीने में निकला?

(क) मार्च

(ख) अप्रैल

(ग) जुलाई

(घ) सितंबर

उत्तर- (घ) सितंबर

© JCERT not to be republished

13. चित्रकला किसकी आवाज़ है?

(क) समाज की

(ख) पेट की

(ग) दिमाग की

(घ) अंतरात्मा की

उत्तर- **(घ) अंतरात्मा की**

14. किसमें कहा गया है- "जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है""

(क) रामायण

(ख) रामचरितमानस

(ग) गीता

(घ) उपनिषद्

उत्तर- **(ग) गीता**

15. सन् 1948 में लेखक ने कहाँ जाकर चित्र बनाए थे?

(क) मनाली

(ख) नैनीताल

(ग) श्रीनगर

(घ) महाबलेश्वर

उत्तर- **(ग) श्रीनगर**

16. 'हेनरी कार्तिए- ब्रेसाँ' कहाँ का प्रसिद्ध फोटोग्राफ़र था?

(क) जर्मनी

(ख) इटली

(ग) रूस

(घ) फ्रांस

उत्तर- **(घ) फ्रांस**

17. लेखक के जीवन का कहाँ का दौर जागृति का चरण था?

(क) पेरिस

(ख) बंबई

(ग) गोंदिया

(घ) अकोला

उत्तर- **(ख) बंबई**

18. लेखक ने जीनियस किसे कहा है?

(क) मातीस को

(ख) शागाल को

(ग) पिकासो को

(घ) सेज़ाँ को

उत्तर- **(ग) पिकासो को**

© JCERT not to be republished